Aapko Sahajayoga Badhana Chahiye

Date	:	5th December 1999
Place	:	Delhi
Type	:	Seminar & Meeting
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 04
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	05 - 06

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

सत्य को पाने वाले सभी सहजयोगियों को हमारा प्रणाम। आप लोग इतनी बड़ी संख्या में यहाँ उपस्थित हुए है ये देखकर मेरा वाकई में हृदय भर आया है और सोच-सोच के कि मेरे ही जीवन काल में इतने लोगों ने, इतने दूर-दूर के लोगों ने, सत्य को प्राप्त किया है। सत्य के बगैर मनुष्य का जीवन बिल्कुल व्यर्थ है, जैसे अन्धेरे में इन्सान टटोलता रहता है उसी तरह सत्य के बगैर मनुष्य भटक जाता है। उसमें उसका मै दोष नहीं मानती, दोष है उस अन्धेरे का जो उसे घेरे हुए है। जैसे कहा है आपको और सबको सहजयोग बढ़ाना चाहिए। ये मेरी भी बड़ी इच्छा है कि सहजयोग आप लोग बढ़ा सकते हैं और फैलना चाहिए। सबको ये सोचना चाहिए यह हमने पाया है हम भी दूसरों को दें और इसको बढ़ाएं। इससे सहजयोग बढ़ेगा ही लेकिन उससे एक शान्तिमय, सुन्दर सा ऐसा स्वर्ग इस संसार में आ जाएगा। यह आपके हाथ में है कि आप लोग इस कार्य को पूरी तरह से करें और हिन्दुस्तान में यह कार्य बहुत ज़ोरों में हो रहा है, उसका कारण ये है कि भारतवर्ष एक योग-भूमि है एक पुण्यभूमि है और पुण्यभूमि में इस तरह का कार्य होना था ही, लिखा ही था। विधि थी। किन्तु इतने जोरों में और इतना बढ़कर ये परिवार इतना परिपक्व होगा ऐसी कभी भी मुझे उम्मीद नहीं थी। लेकिन यह घटित हो रहा है और होगा भी। इसका आनन्द जो आप उठा रहे है वो दूसरों को भी देना चाहिए।

हिन्दुस्तान तो है ही मेरा देश और यहाँ आने में जो एक विशेष आनन्द होता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता और जब मै आप लोगों को देखती हूँ, एयरपोर्ट पर, तब मुझे लगता है कि न जाने कितने हृदयों में ये आनन्द आड़ोलित हो रहा है और कितने ही लोग इस आनन्द से प्लावित हो रहे हैं। इसी से हमारे बच्चों की भी रक्षा होगी, और हमारे युवा लोगों की भी रक्षा होगी। इतना ही नहीं, लेकिन हमारे देश में सुबद्धता और असली माने में स्वराज्य आएगा। स्व: का मतलब है आत्मा और आत्मा का राज्य आना ही स्वराज्य है। स्वतन्त्र का मतलब है फिर वही आत्मा का तन्त्र माने आत्मा की एक रीत। ये दोनों आनी चाहिए और वो आ गई है। आप लोगों ने इसे स्वीकार किया है अपने जीवन में उतारा है। लेकिन अब दूसरों को भी उबारने का, उनके भी उद्धार का यही समय है इसको करना चाहिए। अभी मैंने बहुत सी बातें देखीं तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मिलेनियम का असर कितने ज़ोरों में आ रहा है। जैसे कि हमारे बहुत से सहजयोगी विदेश से भी आए थे और जो गए थे उड़ीसा, वहाँ लोगों को सहजयोग सिखाया और वहाँ उन्होंने नौ सेन्टर स्थापित किये। जब साइक्लॉन (Cyclone) आया, उड़ीसा में, उसका कारण है, क्योंकि

वहाँ बहुत अनाप शनाप बातें हो रही थीं, गलत बातें हो रही थी। तो एक भी, एक भी सहजयोगी को कुछ क्षति नहीं हुई। उनके मकान नहीं गिरे, उनको कुछ नहीं हुआ। इसी प्रकार टर्की में हालांकि वो लोग पहले मुसलमान थे और अब असली मुसलमान हो गए और जब ये सहजयोग में आ गए, करीबन दो हज़ार से ऊपर लोग वहाँ सहजयोग में है। तो वहाँ भी दो बार बहुत बुरी तरह से भूकम्प आया लेकिन एक भी सहजयोगी उस भूकम्प में ज़रा सा भी दुखी नहीं हुआ। किसी के रिश्तेदार तक नहीं मरे, वो लोग तो बच ही गए। ऐसी अनेक वारदात हुई इटली में भी और हर जगह मैं देखती हूँ कि सहजयोगी एकदम बिल्कुल पूरी तरह से जैसे संरक्षित है और इस संरक्षण में आप लोग पनप रहे हैं। इसका मतलब है जो हम कहते है कि ये Last Judgement है वो शुरु हो गया है और वो चल रहा है बड़ें ज़ोरों से। आप लोग सब ध्यान करते ही है ओर आपने सहज में बहुत उन्नति कर ली, लेकिन ये सब पाने पर दूसरों को भी देने की इच्छा होनी चाहिए। ये इच्छा होगी ज़रूर लेकिन किसी न किसी वजह से इसकी इच्छा पूर्ति नहीं होती। उसे आप लोगों को पूरी तरह से जोश से करना चाहिए। संसार के कार्य तो चलते ही रहते है घरेलू बातें चलती ही रहती हैं और उसमें से निकलके और लोगों को जागरण देना उनको संवारना उनका उद्धार करना ये आपका एक परम कर्तव्य है। और इसकी दारोमदार आप ही के ऊपर में है। आप ही लोग इसे कर सकते है और बहुत से कर भी रहे है लेकिन मेरे विचार से इससे भी ज्यादा सोच-विचार करके कि हमारा जो सुख है, हमारा जो आनन्द है, हमने जिसे प्राप्त किया वो और भी प्राप्त करें इस विचार से गर आप उधर थोड़ी सी दृष्टि लगाएं तो बहुत कुछ हो सकता है इस भारत वर्ष में। और मै तो सोचती हूँ कि ये कार्य कोई कठिन नहीं क्योंकि इसमें कोई झगड़ा नहीं, कोई आफ़त नहीं कोई दवा नहीं, कोई दारु नहीं, कुछ नहीं, सिर्फ लोगों की कुण्डलिनी जागृत करना और उसकी शक्ति आपके अन्दर है उसको इस्तेमाल करना है। जब आपके अन्दर शक्ति है तो आप उसको इस्तेमाल नहीं करोगे तो उसका क्या फायदा? उस शक्ति को आप सब इस्तेमाल करें और निश्चय करें कि हर आदमी, हर सहजयोगी कम से कम सौ आदमियों को पार करे, सबसे बात करें और उसमें शर्माने की कोई बात नहीं है, घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि हम सत्य पर खड़े हैं। और आजकल जो तरह-तरह के गुरु घण्टाल निकले हुए है उनका यही इलाज है कि हम खुले आम ये बातें करें, सबसे बात करें और उनसे कहें कि इस चक्कर से बचो नहीं तो वो लोग भी खत्म हो जाएंगे। ये हमारा कर्तव्य है कि जैसे संसार की नाव डूब रही है और उसको बचाने वाले आप ही है। आपको किसी तरह से भी यही कोशिश करनी चाहिए कि हम कितने लोगों को पार कराएं। ये आनन्द अपने ही हृदय में कभी समा नहीं सकता, गर समा सकता तो हम क्यों अपना घर द्वार छोड़ करके और बाहर घूमते और लोगों को पार कराते। ये ऐसी स्थिति है कि उसमें लगता है कि दूसरों के साथ भी मिल-जुल करके इसका उपयोग लें। और इस

स्थिति पर गर आप है तो उसका पूरा इस्तेमाल करना चाहिए और उस ओर अग्रसर होना चाहिए, उस तरफ बढ़ना चाहिए। और आशा है कि अगले वर्ष जब हम यहाँ फिर से हिन्दुस्तान आएं तो इससे कई गुना ज्यादा लोग सहजयोग में उतरे हुए नज़र आए। आपने सत्कार किया है वो मै क्या कहूँ, कोई ज़रूरत नहीं थी पर आपकी इच्छा है तो मै मान लेती हूँ भई चलो सत्कार करो। पर वो तो मुझे उसी दिन दिखाई दिया जब मै यहाँ पर एयरपोर्ट पर आई थी और किस तरह से लोग बिल्कुल, प्यार से बिल्कुल दीवाने हो गए। तो ये प्यार की महिमा है और इस प्यार को बाँटना और देना ये भी बड़ी भारी बात है। और इस जन्म में गर ये होगा तो न जाने कितने ही पुण्यों का फल मिल जाएगा। मेरे अनन्त आशीर्वाद है आप सबको।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

सारांश (Excerpt) Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

सत्याच्या प्रकाशात आलेल्या सर्व सहजयोग्यांना नमस्कार. इतक्या मोठ्या संख्येने तुम्हाला इथे एकत्र जमलेले पाहून माझे हृदय खरोखरच भरून आले आहे. शिवाय माझ्या जीवितकालामध्ये एवढे सहजयोगी जगभर झाले याचेही मला मोठे समाधान आहे. सत्य जाणल्याशिवाय मानवी जीवन अर्थशून्य आहे; तो प्रकाश मिळत नाही तोपर्यंत मनुष्य आयुष्यभर भरकटतच राहतो. पण मी हा माणसाचा दोष समजत नाही. दोष असेल तर त्याला व्यापून राहिलेल्या अंधाराचा. म्हणूनच मी पुन्हा सांगत असते की तुम्हाला जो सहजयोगामधून प्रकाश मिळाला, तो सहजयोग आणखी खूप लोकांना द्या; तुम्हाला जे मिळाले आहे ते इतरांना वाटा म्हणजे सहजयोग आणखी पसरेल. त्याच्यातूनच या भूतलावर एक सुंदर शांतीचा स्वर्ग निर्माण होणार आहे. ही तुमचीच जबाबदारी आहे. भारतात आता हे कार्य खूप जोराने चालले आहेच. तशी ही भारतभूमि योगभूमि आहे आणि इथे हे होणार हे खूप पूर्वीच भाकित केले गेले आहे.

भारत ही माझी मातृभूमि आहे आणि इथे येण्याचा आनंद शब्दांतून व्यक्त करणे अवघड आहे. तुम्हा सर्वांना भेटल्यावर तर हा आनंद द्विगुणित होतो. त्यातूनच इथे खऱ्या अर्थाने स्मरमय अर्थात आत्म्याचे राज्य प्रस्थापित होईल; स्व-तंत्राचा अर्थही तोच व हेच आता इथे घटित झाले आहे. म्हणूनच तुमच्यासारखे आणखी लोक सहजयोगात आणण्याचे कार्य तुम्हाला करायचे आहे. नुकतेच मला समजले की काही परदेशीय सहजयोगी इथे आले आणि सहजयोगाचे कार्य करण्यासाठी ओरिसात गेले; तिथे नऊ केंद्रे त्यांनी सुरू केली. अलिकडे झालेल्या भीषण वादळात तेथील एकाही सहजयोग्याचे कसलेही नुकसान झाले नाही. तुर्कस्थानमध्येही (तिथे दोन हजार सहजयोगी आहेत) भूकंप झाला तेव्हा तेथील सर्व सहजयोगी वाचले. कुणालाही कसलाही अपाय झाला नाही. तेव्हा सहजयोगात तुमचे पूर्ण संरक्षण होणार आहे हा

विश्वास बाळगा. तुम्ही आता ध्यानामधून बांगल्या स्थितीला आले आहात तेव्हा ही इच्छा तुमच्यानध्ये प्रबळ झाली पाहिजे, त्या इच्छापूर्तीचा ध्यास तुम्हाला लागला पाहिजे. म्हणजे सांसारिक जबाबदारी सांभाळूनही कार्य करणे हे प्रत्येकाचे परम कर्तव्य आहे हे तुमच्या लक्षात येईल. त्यातूनच या भारतवर्षातही खूप खूप कार्य होईल. हे अवघड नाही कारण दुसऱ्यांची कुंडलिनी जागृत करण्याची शक्ति तुम्हाला मिळालीच आहे. एरवी त्या शक्तीचा काय उपयोग? प्रत्येकाने कमीत कमी एक हजार लोकांना जागृति देण्याचा निश्चय केला तर किती प्रचंड कार्य होईल हे बघा. त्यामध्ये कसला संकोच वाटायची जरुर नाही, अगदी राजरोसपणे लोकांना सहजयोग सांगत चला म्हणजे सगळीकडे पसरलेल्या अ-गुरुंचा सुळसळाटही कमी होईल, आणि त्यांच्या कचाट्यात अडकलेल्या लोकांची सुटका होईल. जास्तीत जास्त लोकांबरोबर आपल्याला सहजयोगाचा आनंद कसा मिळवता येईल इकडेच तुमची दृष्टि वळली पाहिजे. अशा स्थितीत येण्याचा तुम्ही सतत प्रयत्न केला पाहिजे.

आज गुरु नानक साहेबांचा जन्मदिवस आहे व भारतात सगळीकडे तो उत्साहाने साजरा होत आहे. गुरु नानक सहजबद्दलच बोलायचे. धर्मामध्ये उपास-तापास, तीर्थ-यात्रा, ग्रंथपठण इ. अवडंबर त्यांना मान्य नव्हते. उलट प्रत्येकाने स्वतःमधील परमात्मा जाणला पाहिजे असे ते सांगत. त्या काळच्या थोर संतांच्या कविताही त्यांनी गुरु-ग्रंथामध्ये समाविष्ट केल्या. आपण सहजयोगांतही कुणा एका संतालाच मानतो असे नाही तर सर्व थोर संतांचा आदर राखतो. शीख धर्मात नंतर-नंतर पंथ-भावना बळावली व शिखांचे वेगळे असे विशिष्ट रुप-पेहराव इ. दिसू लागले. त्यामुळे बाह्य स्वरूपाला व कर्मकाण्डांना जास्त महत्त्व येऊ लागले आणि अंतरात्म्याचा शोध क्षीण होऊ लागला. पण शीख समाजाला सहजयोगात आणणे अवघड नाही कारण गुरु नानक साहेब सहजचीच भाषा बोलत होते. उदा. ते म्हणत 'सहज समाधि लागो'. कुण्डलिनीबद्दलही त्यांनी लिहून ठेवले आहे. सहजयोगात आपण ते प्रत्यक्ष अनुभवतो. पण त्यांनी फक्त त्यांच्या दोनच शिष्यांना आत्मसाक्षात्कार दिला, म्हणून त्याचा फारसा उपयोग झाला नाही व लोकांचा बाह्यातील कल वाढत गेला. म्हणून ते स्वतःला मुसलमानांचा पीर तसाच शिखांचा गुरु असे म्हणत. पण त्याचा गर्भित अर्थ लोकांच्या लक्षात आला नाही.

पुढच्या वेळेस मी भारतात परत येईन तेव्हा याच्यापेक्षाही खूप पटीने जास्त लोक सहजयोगात असतील अशी मी आशा करते.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.

●